Research Journal of Language, Literature and Humanities _____E-ISSN 2348-6252
Vol. **3(5),** 1-6, May **(2016)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

भारत के आर्थिक विकास में बीमा की भूमिका

नीतू सोलंकी[1] और पीयूष शर्मा[2]
[1]दे.अ.वि.वि., इन्दौर
[2]आर.एम.आई., सेंधवा, इन्दौर

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 7th October 2015, revised 20th April 2016, accepted 10th May 2016

शोध सार

प्रस्तुत शोध-पत्र के माध्यम से बीमा आर्थिक विकास में जो भूमिका लिए हुए है इस विषय को बीमा के उत्तरदायित्वों व कार्यों के आधार पर स्वीकार किया जा सकता है । वर्तमान में यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं है कि बीमा के बिना औद्योगिक अर्थव्यवस्था कोई भी कार्य नहीं कर सकती है । अत: आर्थिक विकास की प्रक्रिया जोखिम से परिपूर्ण प्रक्रिया है । बीमा आर्थिक विकास की प्रक्रिया में निहित जोखिम हेतु सुरक्षा प्रदान करता है एवं आर्थिक विकास के लिए वित्तीय साधनों की उपलब्धि में भी महत्वपूर्ण रूप से योगदान देता है ।

शब्द कुंजियाँ:- बीमा, विकास, आर्थिक, जोखिम ।

प्रस्तावना

"जोखिम अनिश्चितता का ही नाम है और अनिश्चितता जीवन की आधारभूत वास्तविकताओं में से एक है ।"

पं. जवाहरलाल नेहरु ने भी लिखा है[1] - "जोखिम सर्वव्यापी है, सभी वस्तुओं , सभी सजीवों में विद्यमान है, जो सभी अस्तित्व में अंतर्निहित है ।"

आज प्रत्येक व्यक्ति अनिश्चतताओं एवं जोखिमों से घिरा हुआ है चाहे वह समृद्ध व्यक्ति हो या सामान्य व्यक्ति, मनुष्य सदैव ही स्वयं की सुरक्षा हेतु प्रयासरत रहा है ।

वह जोखिमों से सुरक्षा पाने तथा अनिश्चतताओं से मुक्ति पाने के लिए भिन्न-भिन्न उपाय खोजता है । बीमा भी उन सभी उपायों में से एक उपाय है ।

बीमा आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । इसके अभाव में दुनिया की अनेक अनिश्चतताओं एवं जोखिमों से बचाव संभव नहीं , असंभव हो जाता है ।

उद्देश और प्रविधि

१. बीमा की परिभाषा व अर्थ को जानना ।
२. बीमा के विभिन्न प्रकारों की जानकारी प्राप्त करना ।
३. आर्थिक विकास में बीमा की भूमिका को जानना ।
४. सार्वजानिक व निजी क्षेत्र की बीमा संस्था के नाम, प्रीमियम, पॉलिसी, कार्यालयों एवं क्षतिपूर्ति से अवगत होना |

यह शोध-पत्र "बीमा की भूमिका" आर्थिक विकास के प्रगतिशील परिवर्तन में अपना पृथक स्थान लिए हुए है , यह प्रतिपादन करना है ।

यह शोध-पत्र द्वितीयक आकंड़ो पर आधारित है, जो बीमा संबधित पुस्तकों, लेख, बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण की वार्षिक प्रतिवेदन से संबंधित है ।

साहित्य समीक्षा

भारत के आर्थिक विकास मे बीमा की भूमिका इस विषय मे " पूर्व के शोध अध्ययन से यह सिद्ध हो गया है कि वर्तमान समय मे बीमा अपने ग्राहकों को संतोषजनक सेवा व समय पर

उत्तरदायित्व का निर्वाह कर वचन निभाकर अपने ग्राहकों में बढोत्तरी करके आर्थिक विकास को प्रगति की ओर ल े जा रहा है वर्तमान में बीमा क्षेत्र आर्थिक विकास में अपना विशिष्ट | स्थान रखता है।

भारत के आर्थिक विकास में बीमा की भूमिका इस संदर्भ में शोध अध्ययन सन्दर्भ साहित्य में प्रस्तुत है |

मोनालिसा घोशाल (२०१२)[२] द्वारा शोधपत्र स इन इकॉनोमी - ऑफ़इंडिया(२०१३) पार्वती. जी ,[३] द्वारा शोधपत्र इुरेंस सेक्टर - श्रीनिवासुलु.सूबा रॉय एवं आर.ऍम.डॉ,ऑन इंडियन इकॉनोमी (२०१३)[४] द्वारा शोधपत्र कॉन्ट्रिब्यूशन ऑफ़ इन्शुरेंस सेक्टर टू - डॉ , ग्रोथ एंड डेवेलोप्मेंट ऑफ़ द इंडियन इकॉनोमीवर्षा रोकाड़े एवं बबीता यादव (२०१३)[५] द्वारा शोधपत्र लाइफ इन्शुरेंस सेक्टर डेवेलोप्मेंट एंड इट्स रोल इन इकॉनोमी ग्रोथ ऑफ़ इंडिया अंजू , (२०१३) वर्मा एवं रेणु बाला[६] द्वारा शोधपत्र द रिलेशनशिप बिटवीन लाइफ इन्शुरेंस एंड इकॉनोमी ग्रोथ आदि ने अपने अध्ययन स्वरूप यही निश्कर्ष दिये कि बीमा भारत के आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । मैंने भी इस शोधपत्र के माध्यम से बीमा की भूमिका को भिन्न रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

बीमा क्या है? :- "जोखिम से सुरक्षा का उपाय बीमा है ।" बीमा एक वचन है जो किसी कंपनी , समाज या सरकार द्वारा हानियों से सुरक्षा प्रदान करने, बीमारी, मृत्यु आदि के विरुद्ध प्रावधान करने के लिए नियमित भुगतानों के बदले दिया गया है।"

बीमा जोखिमों को बांटने का एक उपाय है, जिसमें समान जोखिमों से घिरे हुए व्यक्ति अपनी जोखिमों को दूसरे व्यक्ति अथवा व्यक्तियों को हस्तांतरित कर देते है ।

सर विलियम बेरिज[७]: "बीमा जोखिमों के सामूहिक वहन को कहते है ।"

सर जॉन मैगी[७] के अनुसार: "बीमा एक योजना है, जिसके द्वारा लोग बड़ी संख्या में सहयुक्त होकर व्यक्तियों के जोखिमों को सबके ऊपर अंतरित करते है ।"

बीमा के अर्थ को स्पष्ट रूप से जानने के पश्चात् बीमा में निम्न बातों का सम्मिलित होना सिद्ध होता है:-

जोखिम से सुरक्षा, जोखिम को बाँटना , जोखिम अंतरण सहकारी व्यवस्था, बीमा एक अनुबंध, विस्तृत क्षेत्र , घटना के घटित होने पर भुगतान , तथा कानून द्वारा नियमन आदि

चित्र-१

बीमा का वर्गीकरण[८]

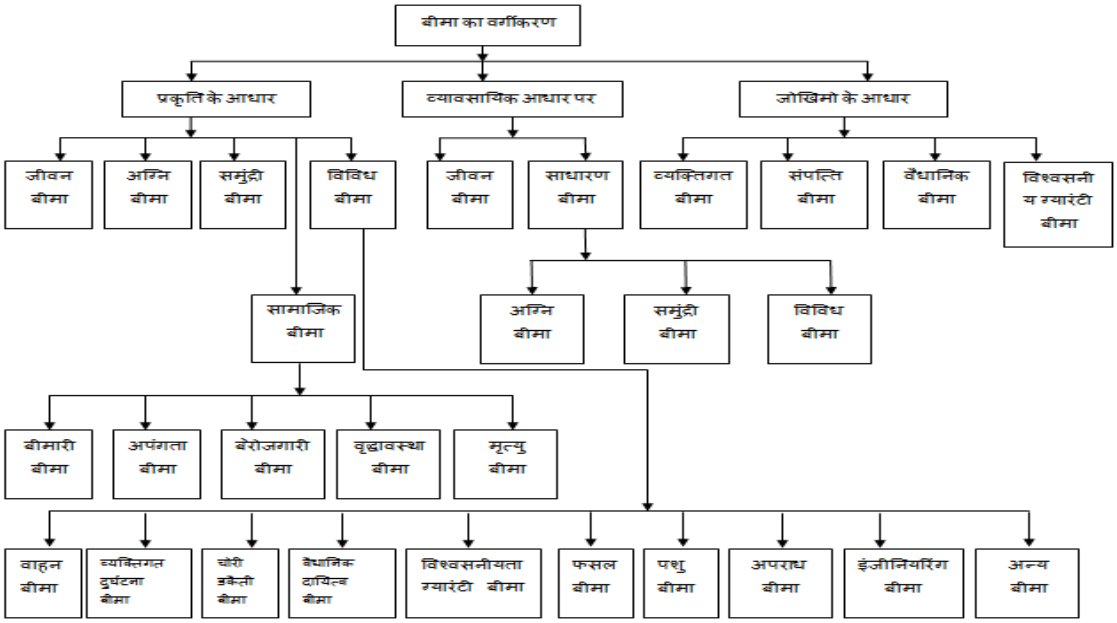

आर्थिक विकास में बीमा की भूमिका[९]

आर्थिक विकास के लिए विनियोग करना बहुत आवश्यक है और विनियोग बचत के द्वारा ही संभव है ऐसे में बीमा कंपनी एक महत्त्वपूर्ण साधन है जिसके द्वारा बचत को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसके द्वारा निम्न एवं मध्यम वर्ग भी आर्थिक विकास में विनियोग द्वारा जुड़ सकते है ।

आज के समय में बीमा कम्पनियों के बिना भावी जोखिमों व अनिश्चितता से विजय प्राप्त नहीं कर सकते है । आर्थिक विकास में बीमा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । बीमा इस भूमिका को संरक्षण और संवर्धन दोनों रूपों में पूर्णत: निभा रहा है , जो इस प्रकार है:-

१. मानव-जनित एवं प्राकृतिक जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करना ,
२. विभिन्न जोखिमों के विरुद्ध बीमा एवं नागरिक दायित्वों से सुरक्षा प्रदान करना ,
३. पूँजी निवेश एवं बचतों को प्रोत्साहन देना ,
४. मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण करना ,
५. सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश द्वारा आर्थिक योजनाओं एवं वित्त उपलब्धि में योगदान देना ,
६. सामाजिक क्षेत्र में निवेश एवं लघु व्यवसायों को प्रोत्साहन देना ,
७. जोखिमयुक्त कार्यो को प्रोत्साहन देना ,
८ . उद्योगों के विकास में योगदान देना ,
९ . उद्यमिता विकास में योगदान और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान देना ,
१०. सेवा क्षेत्र के विकास में योगदान तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना ॥

भारत में बीमा कंपनी सहकारिता व संभावना के सिद्धांत पर एक बड़े परिवार के रूप में व्यक्तिगत , व्यावसायिक एवं सामजिक दायित्व का निर्वाह कर रही है ॥ वह समयानुसार कर्मचारी संख्या बढ़ाने में भी सफल हो रही है ॥ एजेंटो एवं दलालों को भी प्रशिक्षण देकर उन्हें बीमा सम्बंधित सम्पूर्ण जानकारी प्रदान कर आर्थिक विकास को बढ़ावा और सुदृढ बना रही है ॥

आर्थिक विकास को तो बीमा क्षेत्र बढ़ावा देता है साथ-साथ वह गोल्डन जुबली फांउडेशन जो २०-१०-२००६[१०] को स्थापित व रजिस्टर्ड हुआ है इसके माध्यम से शिक्षा को प्रोत्साहन , चिकित्सा राहत व सामान्य उपयोगी सहायता हेतु भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो निम्न तालिका से स्पष्ट है ।

तालिका-१

गोल्डन जुबली फांउडेशन[१०]

वर्ग	संख्याएं	प्रस्तावित राशि (.रु)
शिक्षा को बढ़ावा	१५०	२२५६२,३०,१६,
चिकित्सा राहत	१४०	२२८१७,४०,५५,
सामान्य जन उपयोगिता	३५	५७५५,६०,६८,
कुल	३२५	५०१३४,३२,४०,

अत: कहा जा सकता है कि बीमा जहाँ एक और उपलब्धियां प्रदान करता है वहीं दूसरी और यह भविष्य की भय से भी मुक्ति प्राप्त करवाता है ।

भारत के आर्थिक विकास में वर्तमान में निम्न बीमा संस्थाए महत्वपूर्ण स्थान रखती है ।

तालिका-२

भारत में रजिस्टर्ड बीमा [११]

क्र.	बीमा का प्रकार	सार्वजनिक क्षेत्र	निजी क्षेत्र	कुल
१	जीवन बीमा	१	२३	२४
२	गैर जीवन बीमा	६	२२	२८
३	पुन:	१	0	१
कुल		८	४५	५३

तालिका-३

बीमा तालिका (गतवर्ष + चालू वर्ष)[११]

जीवन बीमा	२०१३-१४		२०१२-१३	
	सार्वजानिक क्षेत्र	निजी क्षेत्र	सार्वजानिक क्षेत्र	निजी क्षेत्र
प्रीमियम (रु करोड़ मे)	२३६९४२.३०	७७३४०.९०	२०८८०३.५८	७८३९८.९१
नवीन पॉलिसी (लाख में)	३४५.१२	६६०	३६७.८२	७४.०५
कार्यालय संख्याएं	४८३९	६१९३	३५२६	६७५९
लाभ का भुगतान (रु. करोड़ में)	१५८०८१	५८९९४	१३४९२२	५६९२३
गैर जीवन बीमा				
प्रीमियम (रु. करोड़ में)	३८५९९.७१	३२०१०.३०	३५०२२.१२	२७९५०.६९
नवीन पॉलिसी (लाख में)	६००.०६	४२४.४७	६८९.६८	३८०.५६
कार्यालय संख्याएं	७८६९	२००३	६२७२	१८२७
क्षतिपूर्ति (रु. करोड़ में)	२७८१७.९६	१७८७४.११	२५०६१.३७	१४५६२.२४

८ जनवरी २०१५[१२] को बीमा विनियामक विकास प्राधिकरण विकास प्राधिकरण के द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष २०१३-१४ को घोषित किया । जिसके माध्यम से हमें बीमा क्षेत्र का भारत की अर्थव्यवस्था में महत्त्व का स्थान क्या है यह जानकारी उपलब्ध कराती है ।

बीमा किस प्रकार जोखिमों की पूर्ति कर यह भूमिका निरंतर अदा करता है ।

निम्न आंकड़ो द्वारा प्रत्येक बीमा कंपनी की लाभदेयता व भुगतान को जाना जा सकता है जो आर्थिक विकास में सहायक है ।

निष्कर्ष

बीमा जहाँ हमारे देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है वहीं दूसरी और यह जीवन को सुरक्षा प्रदान भी करता है तथा जोखिमों को वहन करने का वचन देता है||

अन्तः बीमा वर्तमान में हमारे लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला साथी स्वरुप प्रतीत हो रहा है A बीमा आज देश की अर्थव्यवस्था को प्रगति की ओर बढाने में अपनी बड़ी ही प्रशंसनीय व सराहनीय भूमिका अदा कर रहा है || बीमा निम्न आय वर्ग से समृद्ध आय वर्ग के लिए आज महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है , क्योंकि यह गाँव से शहर तक सभी को अपने घेरे में लेने में कामयाब हुआ है , जिससे हमारे भारत देश का आर्थिक विकास निरंतर हो रहा है ।

तालिका-४

आई.आर.डी.ए. वार्षिक रिपोर्ट[१२]

क्र.	बीमा संस्था का नाम	कुल दावे (प्रारम्भ + चालू)		दावे भुगतान	
		पॉलिसियों की संख्या	राशि करोड़ रु. में	संख्याएं a	%
१	एल.आई.सी.	७६०३४४	८९०५.०४	७४६२१२	९८.१४ %
२	आई.सी.आई.सी आई.	१३३९८	३५३.४७	१२६०८	९४.० %
३	एच.डी.एफ.सी. लाइफ	७२५९	२५४.३२	६८२४	९४.०१ %
४	एस.बी.आई.लाईफ	१४२३३	२८८.५४	१२९६०	९१.०६ %
५	मेक्स लाईफ	९४७८	२५०.०१	८८९६	९३.८६ %
६	कोटक लाईफ	२९६३	८८.८१	२६८७	९०.६९ %
७	स्टार यूनियन	१०२२	२५.०१	९४९	९२.८६ %
८	भारती अक्सा	१०७८	३३.७९	९५०	८८.१३ %
९	बजाज अलांइज	२३७२४	४४०.९८	२१६५८	९१.२९ %
१०	केनरा एच. एस.बी.सी.	३२७	३१.९७	५४४	८६.७६ %
११	अविवा	२०३३	११९.८३	१७०८	८४.०० %
१२	रिलायंस लाईफ	२१०३३	२९८.४४	१७२४१	८१.७४ %
१३	सहारा लाईफ	८३६	७.७९	७५४	९०.१९ %
१४	टाटा ए.आई.ए.	४७११	११४.१२	४२२५	८९.६८%
१५	मेट लाईफ	२५१०	१०८.१७	२२६५	९०.२४ %
१६	बिरला सनलाईफ	९१९७	३४४.८२	८०७१	८७.७६ %
१७	आई.डी.बी.आई फेडरल	९३२	३९.५६	८४२	९०.३४ %
१८	इंडिया फस्ट	१२५८	३७.७३	९२०	७३.१३ %
१९	फ्यूचर जर्नली	२२२९	४३.०९	१६६९	७४.८८ %
२०	श्रीराम लाईफ	१४२७	३८.७७	९६६	६७.६९ %
२१	ऐगॉन रेलिगियर	४००	३२.२७	३२४	८१.०० %
२२	एडलविस टोकिया	८०	१०.०३	४८	६०.०० %
२३	डी.एल.एफ. प्रमेरिका	८५८	२७.८३	१९०	२२.१४ %
२४	एक्साइड लाईफ	३७४१	६४.०४	३१११	८३.१६ %

सन्दर्भ सूची-

1. - नौलखा .एल.आर .(२०१६) बीमा के मूलाधाररमेश , ,बुक डिपो आर .बी .डी .पब्लिशिंग, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, पृ.स. ०२ .
2. मोनालिसा घोशाल (२०१२) रोल ऑफ़ इन्शुरेंस इन इकॉनोमी ऑफ़ इंडिया, जेनिथ इन्टरनेशनल जरनल ऑफ बिजनेस इकॉनोमिक एंड मैनेजमेंट रिसर्च ONLINE ISSN-2249-8826 वोल्यूम २ , ईशु -७ पृ.स. ८१ - ९१ www.zenithresearch.org.in
3. जी. पार्वती (२०१३) इम्पैक्ट ऑफ़ इन्शुरेंस सेक्टर ऑन इंडियन इकॉनोमी, इन्टरनेशनल जरनल ऑफ इन्नोवेटिव रिसर्च एंड डेवेलपमेंट , ONLINE ISSN 2278-0211 , वोल्यूम २ VEIW FILE /42333/33829 ईशु -१२ पृ.स. ३०५ - ३०७
4. एम श्रीनिवासुल.सूबा रॉय एवं आर.(२०१३) - कॉन्ट्रिब्यूशन ऑफ़ इन्शुरेंस सेक्टर टू ग्रोथ एंड डेवेलोप्मेंट ऑफ़ द इंडियन इकॉनोमी ISSN-2278 -487X वोल्यूम ७ , ईशु - ४ पृ.स. ४५-५२ www.iosrjournals.org
5. वर्षा रोकाड़े एवं बबीता यादव (२०१३)- लाइफ इन्शुरेंस सेक्टर डेवेलोप्मेंट एंड इट्स रोल इन इकॉनोमी ग्रोथ ऑफ़ इंडिया ,एशियन जर्नल ऑफ़ सोशल साइंसेज एंड ह्यूमनटीसीस ONLINE ISSN 2249-7315 वोल्यूम ३ ईशु - १ ISSN 2249-7315 www.indianjournals.com
6. अंजू वर्मा एवं रेणु बाला (२०१३)- द रिलेशनशिप बिटवीन लाइफ इन्शुरेंस एंड इकॉनोमी ग्रोथ ग्लोबल जनरल ऑफ मैनेजमेंट एंड बिजनेस स्टडीज ISSN 2248-9878 number 4 पृ.स. ४१३ - ४२२ www.ripublication.com / gjmbs.htm
7. ममता चतुर्वेदी (२०१२) आधुनिक बीमा विधि, चतुर्थ संस्करण सेन्ट्रल ला पब्लिकेशन (,इलाहाबाद पृ.स.५
8. [pdf] चैप्टर - १ शोधगंगा १ चैप्टर १ इन्सुरेंस सेक्टर एन ओवरव्यू Shodhgangainflibnet.ac /bitstream/10603/3795/9/09_09_chapter%201.pdf (पृ.स.३८).
9. एम.एन,मिश्रा और एस.बी. मिश्रा (२००७) इन्सुरेंस प्रिंसिपल एंड प्रेक्टिस (२००७) एस.चंद्र एंड क.ली.नई दिल्ली (पृ.स. १६ - २०)
10. www.licindia.in/GJF-home.htm12 (२०१५)
11. आई.आर.डी.ए. - इंडियन इन्सुरेंस मार्केट (२०१६) www.policyholder.gov.in/indian_insurance_market .aspx
12. आई.आर.डी.ए. वार्षिक रिपोर्ट २०१३-१४ (२०१६) www.basunivesh.com/2015/01/08/irda-claim-settlement-ratio-2013-14